योगी कैबिनेट ने उप्र में पांच निजी विश्वविद्यालयों की स्थापना को दी हरी झंडी

लखनऊ

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने राज्य में पांच निजी विश्वविद्यालयों की स्थापना को मंजूरी देने के साथ उनके नाम आशय पत्र जारी करने का निर्णय लिया है। राज्य सरकार के इस प्रस्ताव को योगी कैबिनेट ने भी शुक्रवार को हरी झंडी दे दी।

मंत्रिमंडल की बैठक के बाद वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि कैबिनेट ने अयोध्या में महर्षि महेश योगी रामायण विश्वविद्यालय, कानपुर नगर में महर्षि महेश योगी इंटरनेशनल एग्रीकल्चर विश्वविद्यालय, आगरा में शारदा विश्वविद्यालय, बरेली में फ्यूचर विश्वविद्यालय और हापुड़ में जीएस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए आशय पत्र जारी करने पर सहमति दी। उन्होंने कहा कि इन विश्वविद्यालयों की स्थापना से भारी संख्या में विद्यार्थियों को पढ़ाई करने का अवसर मिलेगा। साथ ही लोगों को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।

कैबिनेट के अन्य महत्वपूर्ण फैसले

–योगी कैबिनेट ने मथुरा में पर्यटन विकास संबंधी कार्य कराए जाने के लिए मथुरा वृंदावन विकास प्राधिकरण को कार्यदायी संस्था नामित किए जाने के संबंध में प्रस्ताव पारित किया।

–उप्र में दलहन व तिलहन का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए चार वर्ष का अभियान चलाया जाएगा। इसके तहत प्रत्येक वर्ष किसानों को दलहन एवं तिलहन के बीजों की नि:शुल्क मिनी किट दी जाएंगी।

–मुख्यमंत्री पर्यटन विकास सहभागिता योजना की नीति निर्धारण के संबंध में प्रस्ताव पारित। इसके तहत प्रदेश में पर्यटन विकास के लिए अब आम लोगों, संस्थानों, जनप्रतिनिधियों की सहभागिता से काम हो सकेंगे।

–उत्तर प्रदेश औद्योगिक निवेश एवं रोजगार प्रोत्साहन नीति 2017 के क्रियान्वयन संबंधी नियमावली के अन्तर्गत प्रदेश में मेगा परियोजनाओं की स्थापना को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से दी जाने वाली विशेष सुविधाओं एवं रियायतों के विषय में प्रस्ताव पारित।

–भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा प्रस्तावित एनएच 31 गाजीपुर से बलिया–मांझी घाट ग्रीन फील्ड परियोजना के संरेखण में प्रभावित ग्राम सभा की भूमि एनएचएआई को नि:शुल्क उपलब्ध कराए जाने के संबंध में प्रस्ताव पारित।

–पावरलूम बुनकर के लिए फ्लैट रेट की व्यवस्था को एक अगस्त 2020 से 31 मार्च, 2023 तक के लिए लागू रखे जाने के संबंध में प्रस्ताव पारित।

–यूपी 112 परियोजना के द्वितीय चरण के लिए सलेक्शन ऑफ मास्टर सिस्टम इंटीग्रेटर की आर एफ पी को तीन भागों में विक्रेंदीकृत कर अलग अलग बिड कराए जाने के संबंध में प्रस्ताव पारित।

–प्रदेश के संस्कृत विद्यालय के मानदेय शिक्षकों को बड़ी राहत। प्रदेश के 570 अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक संस्कृत विद्यालयों में पहले से पढ़ा रहे 518 मानदेय शिक्षकों का कार्यकाल बढ़ाए जाने के प्रस्ताव को मिली हरी झंडी।

–उप्र के सभी थानों में 144.90 करोड़ की लागत से सीसीटीवी कैमरे लगाने का प्रस्ताव पारित।

–प्रयागराज के शृंग्वेरपुर में संस्कृति विभाग की ओर से में निषादराज गुहा सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना का प्रस्ताव पारित।

सरकार सभी कर्मचारियों को समान समझकर फेयर कार्य करे : हाईकोर्ट

प्रयागराज

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा है कि राज्य सरकार से उम्मीद की जाती है कि वह सभी कर्मचारियों को समान समझकर फेयर कार्य करेगी। जूनियर को सीनियर कर्मचारी से पहले नियमित करना मनमाना एवं अनुच्छेद 14 के तहत समानता के मूल अधिकार का उल्लघंन है तथा शक्ति का दुरुपयोग है।

कोर्ट ने कहा कि विभाग अपनी स्वयं की गलती का लाभ नहीं उठा सकता। कोर्ट ने जिलाधिकारी गोरखपुर को संग्रह चपरासी याची को उससे जूनियरों को नियमित करने की तारीख 30 सितम्बर 1989 से नियमित मानकर 10 फीसदी ब्याज सहित सभी सेवा जनित परिलाभों का तीन माह में भुगतान करने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति सरल श्रीवास्तव ने रामानंद गुप्ता की याचिका को स्वीकार करते हुए दिया है।

याची का कहना था कि उसे 1 जनवरी 79 को सीजनल संग्रह चपरासी नियुक्त किया गया। जबकि विपक्षियों को इसके बाद नियुक्त किया गया। किंतु उन्हें 1989 मे नियमित कर लिया गया और याची को कोर्ट के आदेश पर 26 अक्टूबर 17 को नियमित किया गया।

उसने अपने से जूनियर कर्मचारियों को नियमित करने की तिथि से नियमित मानने की अर्जी दी। जिसे तय करने का कोर्ट ने निर्देश दिया तो जिलाधिकारी ने यह कहते हुए मांग अस्वीकार कर दी कि याची के साथ कोई भी उससे जूनियर कर्मचारी नियमित नहीं किया गया। याची को नियमित करते समय उसकी आयु 45 वर्ष की थी। सरकार से आयु में छूट लेने के बाद उसे नियमित किया गया और वह 31 अक्टूबर 18 को सेवानिवृत्त हो चुका है। उसकी सेवा दस साल से कम है। इसलिए उसे पेंशन पाने का अधिकार नहीं है। याची अधिवक्ता का तर्क था कि सरकार नियमित करने में कर्मचारियों के साथ भेदभाव नहीं कर सकती। जूनियर से पहले उसे नियमित किया जाना चाहिए था। इसलिए उससे जूनियर जिस तारीख को नियमित किए गए हैं, उसी तारीख से याची को भी नियमित माना जाय।

कोर्ट ने कहा कि याची को नियमित न कर जूनियर को नियमित करने की अपनी गलती का लाभ सरकार नहीं उठा सकती। कोर्ट ने याची के नियमिती करण आदेश को संशोधित कर जूनियर कर्मचारियों को नियमित करने की तिथि से नियमित मानकर सेवा जनित सभी परिलाभों का याची को हकदार माना है।

गोरखपुर मंडल की सात चीनी मिलों पर 26214.40 लाख गन्ना मूल्य बकाया

गोरखपुर

गोरखपुर मंडल के चार जनपदों की सात चीनी मिलों पर सत्र 3022-23 का 26214.40 लाख गन्ना मूल्य बकाया है। इनमें गोरखपुर, महराजगंज, देवरिया और कुशीनगर चीनी मिलें शामिल हैं। हालांकि 12 मई तक 97427.45 लाख गन्ना मूल्य भुगतान हुआ है। यह कुल गन्ना मूल्य का 78.80 प्रतिशत है। बावजूद इसके इन चीनी मिलों पर अभी भी 26214.40 लाख रुपया बकाया है।

इन चीनी मिलों ने की है पेराई

गोरखपुर मंडल के चार जनपदों में इस सत्र में सिर्फ सात चीनी मिलों ने ही पेराई की। गोरखपुर (पिपराइच), महराजगंज (सिसवा) और देवरिया (प्रतापपुर) में एक–एक चीनी मिल चली। कुशीनगर में चार चीनी मिलों–रामकोला पी, सेवरही, खड्डा और न्यू सुगर मिल ढाढा ने पेराई की। आंकड़ें बता रहे हैं कि इन सभी चीनी मिलों पर 123641.85 लाख रुपया गन्ना मूल्य हुआ, जिसमें से 26214.40 लाख रुपया बकाया है।

इन पर है सबसे अधिक बकाया : इन सात चीनी मिलों में सबसे अधिक बकाया गोरखपुर की पिपराइच, देवरिया की प्रतापपुर और कुशीनगर की सेवरही चीनी मिल पर है। इन तीनों चीनी मिल पर ही 21621.10 लाख रुपये बकाया है।

भुगतान में कुशीनगर के हाटा–रामकोला (पी.) सबसे आगे : कुशीनगर जिले की हाटा चीनी मिल ने 96.05 और रामकोला पंजाब ने 99.55 प्रतिशत गन्ना मूल्य का भुगतान किया है। खड्डा चीनी मिल ने भी 81.99 फीसदी गन्ना मूल्य का भुगतान कर दिया है। सेवरही चीनी मिल गन्ना मूल्य भुगतान में काफी पीछे है। इस चीनी मिल ने अभी तक सिर्फ 62.03 प्रतिशत गन्ना मूल्य का भुगतान किया है। सेवरही चीनी मिल पर गन्ना किसानों का अभी भी 10392.44 लाख रुपया बकाया है। महराजगंज जिले की सिसवा चीनी मिल ने 82.43 प्रतिशत गन्ना मूल्य का भुगतान कर दिया है। इस चीन मिल पर 1718.89 लाख रुपया बकाया है।

गंगा पथ यात्रा को स्वामी चिदानंद और डीएम पौड़ी ने दिखाई हरी झंडी

यात्रा से पूर्व परमार्थ निकेतन में किया गया विश्व कल्याण के लिए अनुष्ठान

ऋषिकेश।

ऋषिकेश परमार्थ निकेतन से देवप्रयाग तक गंगा पथ यात्रा को स्वामी चिदानंद महाराज और जिलाधिकारी पौड़ी डॉ. आशीष चौहान ने झंडी दिखाकर रवाना किया। यात्रा से पूर्व परमार्थ निकेतन में विश्व कल्याण और शांति की कामना को लेकर यज्ञ किया गया।

इस दौरान पौड़ी के जिलाधिकारी आशीष चौहान ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि यह यात्रा उत्तराखंड के विकास और लुप्त होती चारों धामों के यात्रा मार्गों पर पुरानी चट्टियों की पुरानी यादों को भी ताजा करने में सार्थक सिद्ध होगी। दरअसल, प्राचीन काल से ही ऋषिकेश से केदारनाथ तक पहुंचने के लिए पैदल मार्ग का इस्तेमाल किया जाता था। इसकी शुरुआत ऋषिकेश के निकट मोहन चट्टी से होती थी। इस मार्ग से यात्रा ऋषिकेश से गंगा किनारे–किनारे पहाड़ों से होकर देवप्रयाग, श्रीनगर होते हुए रुद्रप्रयाग पहुंचती थी। यह बेहद ही दुर्गम था।

जिलाधिकारी चौहान ने कहा कि पहले यात्रा मार्ग दुर्गम होने के कारण यात्री भिन्न भिन्न पड़ावों पर रात्रि विश्राम के लिए रुकते और फिर मिल जुलकर सभी तीर्थ यात्री आगे बढ़ते थे। इन्हीं पड़ावों को चट्टी कहा जाता था। इसलिए आप जब चारधाम यात्रा कर रहे होंगे तो हर धाम तक पहुँचने के दौरान कई चट्टियां मिलेंगी। जैसे बदरीनाथ मार्ग पर हनुमान चट्टी, केदारनाथ मार्ग पर गरुड़चट्टी, जंगलचट्टी आदि मिलेंगी। इस रूट से यात्रा दुर्गम होने के बावजूद तीर्थयात्री देश भर से आते रह हैं, लेकिन वर्ष 1928 आते आते ऋषिकेश से कीर्तिनगर तक मोटर मार्ग बन चुका था और फिर इस पैदल मार्ग का प्रयोग लगभग बंद हो गया। उन्होंने कहा कि गंगा पदयात्रा पौराणिक मार्ग को पुनर्जीवित करने की पहल के चलते ऋषिकेश से केदारनाथ तक के पौराणिक मार्ग को जीवंत किया जा रहा है।पौड़ी जिलाधिकारी डॉक्टर आशीष चौहान ने इसको पुन: मूल स्वरूप में लाने की पहल की है। इस योजना को गंगा पदयात्रा नाम दिया गया है। इस योजना के अनुसार इस वर्ष से ऋषिकेश से देवप्रयाग तक पैदल चार धाम यात्रा शुरू होगी। ऋषिकेश से देवप्रयाग तक सड़क मार्ग से दूरी 73 किलोमीटर है। इस पैदल से मार्ग से यह दूरी 67 किलोमीटर की होगी।

खबरम्

खास खबरें

क्या जल्द ही एआई पायलट पैसेंजर प्लेन उड़ाएंगे ? अमीरात एयरलाइन के अध्यक्ष ने दिया संकेत

नई दिल्ली। आर्टिफिशियल टेक्नोलॉजी (एआई) की बढ़ती क्षमताओं के साथ, हवाई जहाज अब प्रतीत होता है कि ऑटोपायलट मोड से एआई पायलट मोड में जा सकते हैं। भविष्य में शायद कॉकपिट के अंदर मौजूद दो प्रशिक्षित पायलटों की मौजूदगी खत्म हो जाएगी और एआई पायलटों के साथ हवाई जहाज को अधिक सुचारू रूप से और सुरक्षित रूप से उड़ाया जा सकेगा। कम से कम एमिरेट्स एयरलाइन के अध्यक्ष टिम क्लार्क को तो ऐसा ही लगता है। अपने नवीनतम इंटरव्यू में, क्लार्क ने कहा कि निकट भविष्य में पैसेंजर्स प्लेन में एआई को-पायलट हो सकते हैं। उन्होंने सिंगल–पायलट एयरक्राफ्ट की संभावना पर जोर दिया और संकेत दिया कि पूरी तरह से ऑटोमेटिक फ्लाइट की तकनीक पहले से ही आगे बढ़ रही है।

'हां, यह हो सकता है, तकनीक अब बिल्कुल मौजूद है' एमिरेट्स एयरलाइन के अध्यक्ष ने कहा, 'आप एक–पायलट एयरक्राफ्ट देख सकते हैं। क्या विमान को पूरी तरह से स्वचालित आधार पर उड़ाया जा सकता है? हां, यह हो सकता है, तकनीक अब बिल्कुल मौजूद है। [लेकिन यात्री] यह सोचना पसंद करते हैं कि वहां दो पायलट हों।' क्लार्क टिप्पणियों ने इस बहस को तेज कर दिया कि एआई तकनीक को कितनी तेजी से और किस हद तक विकसित किया जाना चाहिए। हालांकि, अमीरात एयरलाइन के अध्यक्ष ने बाद में प्रशिक्षित पायलटों के कौशल पर जोर दिया।

'पायलट केवल विमान चालक नहीं होते हैं' : क्लार्क ने कहा, 'पायलट केवल विमान चालक नहीं होते हैं; वे अत्यधिक कुशल पेशेवर हैं जो एक व्यापक सुरक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो यात्रियों, चालक दल और कार्गो को उनके गंतव्यों पर सुरक्षित आगमन सुनिश्चित करता है।' एमिरेट्स एयरलाइन के अध्यक्ष ने कहा, 'विमान उड़ाने से परे पायलटों की कई जिम्मेदारियां होती हैं। वे नाविकों, इंजीनियरों, तकनीशियनों, मौसम विशेषज्ञों और ग्राहक सेवा प्रबंधकों के रूप में कार्य करते हैं। एक सामान्य दिन में, पायलट एयरक्रू, ग्राउंड क्रू, केबिन क्रू, एयर ट्रैफिक कंट्रोल और यात्रियों सहित विभिन्न व्यक्तियों के साथ बातचीत करते हैं।' उन्होंने कहा कि पायलटों के लिए विमानन–विशिष्ट शर्तों (जैसे, हवाई यातायात नियंत्रण के साथ रेडियो संचार का उपयोग करना) और पारस्परिक स्तर पर दोनों के लिए प्रभावी संचार आवश्यक है। क्लार्क ने कहा, 'पायलट को उन लोगों के साथ स्पष्ट रूप से सूचनाओं का आदान–प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए जिनसे वे पहले कभी नहीं मिले हैं।

भारत की ये नदी कैसे हो गई शापित आज पानी छूने से भी खौफ खाते हैं लोग

नई दिल्ली।

दुनिया भर में नदियों को जीवनदायिनी का दर्जा मिला हुआ है। इतिहास की किताबों में जब आप नजर डालेंगे तब पता चलेगा कि ज्यादातर सभ्यताएं नदियों के किनारे ही बसना शुरू हुई थीं। भारतीय संस्कृति में नदियों को माता के समान माना गया है।

इसके अलावा यहां नदियों को देवी–देवताओं की तरह पूजा भी जाता है। तमाम तरह के उद्योगों और कृषि से जुड़े कामों में नदी की उपयोगिता को हर कोई समझ सकता है। नदियों के बिना किसी मानव सभ्यता की कल्पना करना भी मुश्किल है। भारत में अधिकतर नदियों की पूजा की जाती है, वहीं कुछ ऐसी भी नदियां हैं जिनके पानी को छूने से लोग खौफ खाते हैं और उनका मानना है कि देश की यह नदियां शापित हैं। इनमें से एक नदी है कर्मनाशा।

कहानी कर्मनाशा की : उत्तर प्रदेश में कर्मनाशा नाम की एक नदी बहती है जिसके पानी का इस्तेमाल आम जनों द्वारा नहीं किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस नदी को श्राप मिला हुआ है। अगर कोई इसके पानी का इस्तेमाल करता है तो उसके सारे काम बिगड़ने लगते हैं जिसकी वजह से आज भी कई लोग कर्मनाशा नदी के पानी का इस्तेमाल नहीं करते हैं। कर्मनाशा दो शब्दों से मिलकर बना है कर्म और नाशा। इसका शाब्दिक अर्थ बताया जाता है जो अच्छे कर्मों को भी नष्ट कर देती है। सोनभद्र, चंदौली, वाराणसी और गाजीपुर से होकर बहने वाली ये नदी बक्सर में गंगा नदी में

जाकर मिल जाती है।

क्या है कर्मनाशा की पौराणिक कथा? : पौराणिक कथाओं में माना गया है कि यह नदी राजा हरिश्चंद्र के पिता सत्यव्रत के लार से बनी हुई है। कहा जाता है कि एक बार सत्यव्रत ने अपने गुरु वशिष्ठ से मानव शरीर के साथ स्वर्ग जाने की इच्छा जताई थी लेकिन गुरु वशिष्ठ ने सत्यव्रत की इस बात से इनकार कर दिया। यही कामना सत्यव्रत ने गुरु विश्वामित्र के सामने जाहिर की। विश्वामित्र ने सत्यव्रत को अपने तपोबल की शक्ति से सशरीर स्वर्ग में भेज दिया। इस पर इंद्र को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने सत्यव्रत के शरीर को धरती की तरफ भेज दिया। गुरु विश्वामित्र ने अपनी साधना की शक्ति से सत्यव्रत के शरीर को स्वर्ग और धरती के बीच में रोक दिया। इंद्र और विश्वामित्र के बीच इसके बाद बड़ा युद्ध हुआ और इस बीच सत्यव्रत का शरीर उल्टा आकाश में लटकता रहा और उनके मुंह से लार निकलने लगी। कहा जाता है कि इसी लार से कर्मनाशा का निर्माण हुआ है। सत्यव्रत की चालाकी के लिए गुरु वशिष्ठ ने उन्हें चांडाल होने का श्राप दे दिया था जिसकी वजह से यह नदी भी शापित हो गई।

लाश को फ्रीजर में रखकर उससे बातें करता था, 18 महीने बाद खुला खौफनाक राज

नई दिल्ली। किसी की मौत के बाद उसके शव को ज्यादा समय तक नहीं रखा जाता है। इसका कारण यह है कि उससे बदबू आने लगती है। लेकिन कई बार ऐसे चौंकाने वाले मामले सामने आ जाते हैं। जहां शवों को काफी समय तक किन्हीं कारणों से रख दिया जाता है। इसी कड़ी में एक ऐसा मामला सामने आया है, जहां एक बेटे ने अपने पिता के शव को 18 महीने तक फ्रीजर में रखा। इसके बाद उसने खुद बताया कि ऐसा क्यों किया गया। दरअसल, यह घटना नीदरलैंड की है। इंटरनेशनल मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, 101 साल के एक वृद्ध आदमी की मौत हो गई। इसके बाद उसके 82 साल के बेटे ने किसी को नहीं बताया। उसने चुपचाप अपने पिता के शव को फ्रिज में रख दिया और बंद कर दिया। इसके बाद एक दिन जब उस शख्स के घर डॉक्टर पहुंचे तब पूरे मामले का खुलासा हुआ।

हुआ यह एक डॉक्टर ने उनके पिता की तबीयत पूछी, तो 82 साल के बुजुर्ग बेटे ने आनाकानी की। उसने डॉक्टर को सही जानकारी नहीं दी तो डॉक्टर ने स्थानीय अधिकारियों को बुला लिया। जब स्थानीय अधिकारी उसके घर पहुंचे, तब जाकर बेटे ने पोल खोल दी। उसने कहा कि उसके पिता की मौत 18 महीने पहले हो गई, लेकिन वह अपने पिता से इस कदर प्यार करता था कि उनके शव को दफनाने की वजह घर में रख दिया। इतना ही नहीं उसने कहा कि वह अपने पिता से बात करता है और वह 18 महीने से अपने पिता से लगातार बात करता है। जब उसकी बात करने की इच्छा होती है तब फ्रीजर खोलकर बात करता है। इतना सुनते ही अधिकारियों के होश उड़ गए। हालांकि डॉक्टर की सलाह पर अधिकारियों ने फ्रीजर खोला और शव को निकाला गया।

दुनिया का वह देश, जहां पर नहीं पाया जाता एक भी सांप, आखिर कहां चले गए सारे सांप..?

नई दिल्ली

भारत समेत दुनिया के अधिकतर देशों में विभिन्न आकार वाले जहरीले सांप पाए जाते हैं, जिनके काटने से हर साल हजारों लोगों की मौत हो जाती है। यह एक ऐसा जीव है, जिसके बारे में सोचते ही शरीर में सिहरन दौड़ जाती है।

यही वजह है कि अगर कहीं रास्ते में सांप दिख जाए तो लोग चुपचाप अपना रास्ता बदल लेते हैं। लोगों में सांपों को लेकर बैठा हुआ ये डर आज भी कायम है और इसी डर के बीच जी रहे हैं। लेकिन आपको यह जानकर हैरानी होगी कि दुनिया में एक देश ऐसा भी है, जहां पर एक भी सांप नहीं पाया जाता। आखिर ऐसा क्यों है। वहां के सारे सांप आखिर कहां चले गए? हम यहां पर जिस देश की बात कर रहे हैं, उसका नाम आयरलैंड है। यूरोप में ब्रिटेन के पड़ोसी देश आयरलैंड में आपको एक भी सांप देखने को नहीं मिलेगा। यहां के चिड़िया घर और सेंक्चुरीज में सांप नजर नहीं आते। यहां के अधिकतर बच्चों ने प्रत्यक्ष रूप से सांप को कभी नहीं देखा है। कुछ लोग अपना शौक पूरा करने के लिए विदेशों से सांप खरीदकर ले आते हैं। सरकार की अनुमति से आने वाले ये सांप वही होते हैं, जिनके अंदर जहर नहीं होता है।

स्थानीय लोगों का है ये दावा : आखिरकार इस देश में एक भी सांप क्यों नहीं है। इसे लेकर आयरलैंड के लोगों का अपना दावा है। स्थानीय लोगों का मानना है कि कई सौ साल पहले उनके देश में भी बहुत सांप हुआ करते थे। एक बार जब देश में सांपों का आतंक बहुत ज्यादा बढ़ गया तो उन्होंने एक स्थानीय %संत पैट्रिक% से मदद मांगी। कहते हैं कि संत पैट्रिक ने अपनी शक्तियों का इस्तेमाल कर समूचे आयरलैंड के सांपों को घेरकर समुद्र की तरफ भेज दिया। उसके बाद से आयरलैंड में एक भी सांप दिखाई नहीं दिया है।

क्या कहता है विज्ञान? : स्थानीय लोगों की आस्था अपनी जगह पर है लेकिन वैज्ञानिकों का इस बारे में कुछ और ही कहना है। नेशनल जियोग्रफिक की एक रिपोर्ट के मुताबिक आयरलैंड में सांप कभी रहे ही नहीं, इसलिए उनके इस देश से गायब होने का सवाल ही नहीं उठता। रिपोर्ट के मुताबिक ऐसे इलाके जहां पर बहुत ज्यादा ठंड होती है, वहां पर सांप रह ही नहीं पाते। यही वजह है कि आयरलैंड समेत न्यूजीलैंड, आइसलैंड, ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका में एक भी सांप देखने को नहीं मिलेगा।

आपका राशिफल 14 मई

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो अ): किसी से कहासुनी न हो यह ध्यान रहे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख आराम प्रभावित होगा। धर्म कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होंगी। भाई–बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक–5–8–9

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। परिवारजनों के सहयोग व समन्वय से काम बनाना आसान रहेगा। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। शुभांक–5–6–7

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आय–व्यय की स्थिति समान रहेगी आर्थिक लाभ हेतु किये गए कार्यों का तत्काल प्रतिफल मिलेगा। एकाकी वृत्ति त्यागें। आय व्यय की स्थिति समान रहेगी। शुभांक 1 2 5

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय मे ध्यान देने से सफलता मिलेगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बनेगी। शुभांक–1–8–9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। बुद्धितत्व की सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग–दौड़ रहेगी। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। मनोरथ सिद्धि का योग है। सुख–सुविधा में वृद्धि होगी। शुभांक–5–6–8

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन भर रहेगा। सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन–भर उत्साह रहेगा। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। शुभांक–6–8–9

तुला (रा री रू रे रो ता ती तू ते): प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे। मनोरथ सिद्धि का योग है। सम्मान मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। आमोद–प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। शुभांक–4–5–6

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू): स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध होंगे। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। लेन देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। शुभांक 5 6 9

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। शुभांक–6–7–8

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): लेन–देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। कारोबारी काम में बाधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। शुभांक–5–6–8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): माता पक्ष से विशेष लाभ होगा। अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। किसी सूचना से पूर्ण निर्णय सम्भव। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। आय व्यय की स्थिति समान रहेगी। शुभांक–1–6–7

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। कामकाज की व्यस्तता से सुख आराम प्रभावित होगा। धर्म–कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होंगी। स्वविवेक से कार्य करें। सभा–गोष्ठियों में मान–सम्मान बढ़ेगा। माता पक्ष से विशेष लाभ होगा। शुभांक–3–5–7